बनास जन

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह, वाराणसी
डॉ. ममता कालिया, दिल्ली
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर
प्रो. माधव हाड़ा, उदयपुर
श्री महादेव टोप्पो, राँची

सम्पादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

कला पक्ष : निकिता त्रिपाठी

सहयोग राशि : 100 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–125 रुपये
200 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–225 रुपये
6000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
10,000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
ह्वाट्सअप : +91–8130072004 (केवल लिखित संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

कृपया रचनाएँ भेजने के लिए सिर्फ ई-मेल का उपयोग करें। आग्रह है कि इस संबंध में पूछताछ न करें। 'बनास जन' में सभी रचनाओं का स्वागत है।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
Peer Reviewed Journal
(A Collection of Literature)

ISSN 2231–6558

अनुक्रम

अपनी बात		5
श्रद्धांजलि		
मलय को याद करते हुए	वीरेंद्र मोहन	7
भाषा और साहित्य के मौन साधक प्रो. भूपतिराम साकरिया	सत्यनारायण व्यास	10
समाजविज्ञानी डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा	सुरेश चन्द्र राजोरा	13
बनास जन विशेष		
इक्कीसवीं सदी : धर्म और उपभोक्तावाद	शंभुनाथ	16
जन्मशती		
शिवानी	वेंकटेश कुमार	29
समरेश बसु 'कालकूट' और उनकी कृति 'कहाँ पाऊँ उसे'	रणजीत साहा	40
शृंखला : देश और उपन्यास		
'आनंदमठ' : परस्तिश की याँ तक कि....	रेणु व्यास	51
विरासत		
लालन शाह फकीर	रूपांतर : माधव हाड़ा	63
कवियों की पृथ्वी		
अँधेरे के आगे और अँधेरा है	आशीष त्रिपाठी	69
उमस में निमैली केशर धार	शम्भु गुप्त	82
सादगी की इबारतें	शिरीष कुमार मौर्य	94
पीड़ा की नदी का घाट	जीवन सिंह	98
कहानी		
कहीं कुछ गड़बड़ हैं	माधव राठौड़	103
खाली जमीन	वैभव सिंह	108
लाली रे दुल्हनिया....	मीरा कांत	116

कविताएँ

पूजा		122
तुलसी छेत्री		125
कल्लोल चक्रवर्ती		127
विवेक निराला		129
अम्बिका दत्त		133
विजय कुमार		135
विमल कुमार		141

कथेतर

ग़ालिब और उनका युग	इब्बार रब्बी	147
डायरी	विष्णु नागर	156
जीवन का नया साथी	अनुराग चतुर्वेदी	164
मैं नरेश सक्सेना से कभी नहीं मिला	दिनेश चौधरी	169
डायरी	रामप्रकाश त्रिपाठी	172
एक स्त्री की बलिदान-कथा का भूला हुआ हलफनामा	सुधीर विद्यार्थी	177
'ढाई आखर प्रेम' सद्भावना यात्रा 2023	विकास कपूर	183

दलित प्रश्न

दलित स्त्रीवाद का प्रतिरोधी पाठ	नामदेव	189

साहित्यिकी

पंचतंत्र और सर्वेंतिस का श्वान-सम्वाद	रमण सिन्हा	195
रवीन्द्रनाथ टैगोर, राष्ट्रवाद और मानवतावादी चेतना	तालीम अख्तर	201
जिंदगी लहजा बलहजा मुख्तसर होती गई	शशिकला राय	215

समीक्षा

'पुस्तक प्रदेश' की प्रासंगिकता	रीता सिन्हा	220
समकालीन हिंदी कविता में स्त्री दखल	प्रज्ञा त्रिवेदी शुक्ला	224
विसंगतियों को कलात्मक संगति से अभिव्यक्त करती कहानियाँ	विमलेश शर्मा	228
'सुखी घर सोसाइटी' में जीवन-संघर्ष के विविध आयाम	रामविनय शर्मा	236
समसामयिकता की राह से गुजरते दो उपन्यास	रेनू त्रिपाठी	243
मृत्यु और हँसी : वयस्कों की बनायी सेटअप का विकल्प	विनीत कुमार	250

अपनी बात

क्या साहित्य के पाठक कम हो रहे हैं? क्या लोग अब साहित्य पढ़ना पसंद नहीं करते? या कुल मिलकर पाठक ही नहीं हैं और अब पढ़ना पुरानी बात हो गई है। यदि ऐसा है तो पुस्तक मेलों में पाठकों की संख्या लगातार कैसे बढ़ती जा रही है? टाइम्स ऑफ इंडिया की एक खबर के अनुसार इस साल दिल्ली में हुए विश्व पुस्तक मेले में 10 फरवरी से 18 फरवरी के मध्य प्रतिदिन एक लाख से अधिक लोगों ने मेले में भ्रमण किया। इसके अलावा राष्ट्रीय पुस्तक न्यास देश भर में अनेक छोटे बड़े शहरों में निरंतर पुस्तक मेलों का आयोजन करता है जो व्यापार की दृष्टि से असफल नहीं होते। इसका मतलब है कि पढ़ने वालों की संख्या बढ़ रही है। नई दिल्ली का पुस्तक मेला इस बात के लिए भी विख्यात है कि तेजी से लोप होती जा रही सामुदायिकता के दर्शन यहाँ होते हैं। देश भर के अलग-अलग राज्यों-शहरों-गाँवों से मेले में केवल प्रकाशक ही नहीं आते अपितु पाठक भी आते हैं। यह मेला केवल बेचने-खरीदने का स्थल नहीं अपितु लोगों को आपसदारी का नया अहसास करवाने का भी माध्यम बनता है। तो क्या किताबें इतनी सस्ती हैं कि भर भर खरीदी जा सकें? यह एक अल्पज्ञात किन्तु सटीक तथ्य है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में अनेक प्रकाशक बहुत सस्ती किताबें छापते हैं। यह सही है कि पुस्तक प्रकाशन एक उद्योग का रूप ले चुका है लेकिन यह भी सत्य है कि सस्ती और बहुत उपयोगी किताबें अभी भी आसानी से उपलब्ध हैं। छोटी पत्रिकाओं के संपादकों के लिए भी यह मेला एक अवसर जैसा होता है जब लघु पत्रिकाओं के पाठक और संपादक सहजता से मिलते हैं और पत्रिकाएँ पाठकों तक पहुँचाने में झंझट नहीं होते।

तब भी हमें नये पाठक बनाने का काम तेज करना होगा। ये पाठक केवल मनोरंजन और ज्ञान के लिए ही किताबों को पढ़ने वाले न हों बल्कि इनमें साहित्य की संजीदगी का आनंद उठाने की क्षमता भी हो। इसके लिए युवा पाठकों को हमारे साहित्यकारों के बड़े और स्थाई महत्त्व के लेखन की जानकारी देनी होगी। परिचय आकर्षण का पहला कदम है। सुरुचि के साथ अपने साहित्य और साहित्यकारों की जानकारी नयी पीढ़ी को इससे जोड़ने का काम करेगी। नए पाठकों की तलाश का काम केवल पुस्तक मेलों और सरकारी आयोजनों से नहीं होगा इसके लिए साहित्य संगठनों, उच्च शिक्षा से जुड़े लोगों और पुस्तक तथा पत्रिकाओं के प्रकाशनतंत्र को पहल करनी होगी। दुर्भाग्य से इस तंत्र की सारी ऊर्जा अपने लेखकों के छवि निर्माण में जाया हो रही है और हम अपने वास्तविक पाठकों से दूरी बनाए हुए है। एक समय में हिंदी पाठकों के लिए उर्दू साहित्य के समृद्ध संसार में प्रवेश करने का आमंत्रण देने के लिए प्रकाश पंडित के अनुवाद और सम्पादन ने बड़ी भूमिका निभाई थी। किताबें अल्पमोली हों और सुन्दर छपाई के साथ आएँ यह तो आवश्यक है ही लेकिन इसके साथ किताबों की

उपलब्धता बढ़ाने और उन तक सुगम पहुँच के नए तौर तरीके खोजने होंगे। इंटरनेट ने इस काम में बड़ी मदद की है तब भी छपी किताब के नए नए पाठकों तक पहुँचने लिए निरन्तर प्रयास जारी रखने चाहिए।

अक्सर यह सवाल किया जाता है कि इंटरनेट और टीवी के जमाने में किताब कौन पढ़ता है? गूगल और विकिपीडिया जैसे साधन सब कुछ उपलब्ध करवा रहे हैं। तब भी किताब का महत्त्व इसलिए बरकरार है कि यह मनुष्य के लिए सूचना, ज्ञान और संवेदना का प्राथमिक स्रोत है। नए-नए तकनीकी साधन उपयोगी हैं और इनका महत्त्व भी है लेकिन ये किताब के विकल्प नहीं हो सकते। उधार ली गई किताब पढ़कर कोई गरीब बच्चा अब्राहम लिंकन बन सकता है भला ऐसा रोमांस और किसी साधन में कहाँ? पुस्तकों के पठन-पाठन से जुडी महत्त्वपूर्ण बात है कि पुस्तक पढ़ने वाला पाठक अपने समय के बारे में सबसे सही जान सकता है। अपने समय के सबसे जरूरी सवालों को जान सकता है और वही निर्णय सक्षम भी हो सकता है। वही पाठक सवाल करना सीखता है जो किसी भी लोकतंत्र को लोकतंत्र बनाने की अनिवार्य शर्त है। पढ़ना केवल जानना ही नहीं होता बल्कि संस्कृति और समाज से सक्रिय संवाद भी है। भाषा विचार की वाहक है और पुस्तक पढ़ने वाला भाषा की शक्ति और सामर्थ्य से खुद को सम्पन्न करता है।

असल में पढ़ना एक ऐसी क्रिया है जिससे आप विचार के स्तर पर भी सक्रिय होते हैं। मतलब यह कि किताब पढ़ते हुए आप उस किताब के विषय पर लगातार अपनी ओर से भी चिंतन मनन करते चले जाते हैं और पढ़ चुकने के बाद आपके भीतर भी कुछ बदल सकने की संभावना बन जाती है। अकारण नहीं कि महान किताबों के बारे में लोगों ने कहा कि इस किताब ने मेरी जिन्दगी बदल दी या इसे न पढ़ता तो आज मैं यह न होता। एक स्तर पर फिल्म या कोई भी कला माध्यम ऐसा कर सकता है लेकिन किताब इंस्टेंट यानी तत्काल मजा देने वाले उत्तेजक नशे की बजाय धीरे-धीरे गहरा असर करने वाली दवा है जिसका सेवन गहरे हितकर है। सांस्कृतिक बहुलता से भरे भारत जैसे महादेश में ऐसे मंच लोगों को सांस्कृतिक जुड़ाव का अवसर देते हैं और लोगों को प्रेरित करते हैं जिसमें पुस्तकें उत्प्रेरक बनती हैं। वस्तुतः यह सच है कि पहले मनोरंजन के लिए मिलने वाला समय किताबों को मिलता था किन्तु टीवी और इंटरनेट ने इसे चुनौती दी है।

×××

इस अंक में विख्यात कथाकार शिवानी और समरेश बसु की जन्म शताब्दी के अवसर पर विशेष आलेख दिए जा रहे हैं जो क्रमशः वेंकटेश कुमार और रणजीत साहा ने संभव किये हैं। वेंकटेश कुमार ने अपने लेख में लोकप्रिय साहित्य बनाम गंभीर साहित्य की बहस में कुछ नए और जरूरी सवाल उठाए हैं। अगले साल हिंदी के एक और लोकप्रिय कथाकार मोहन राकेश की शताब्दी है उम्मीद है कि यह बहस मोहन राकेश की लोकप्रियता पर भी नए ढंग से सोचने समझने की दृष्टि दे। आलोचक अरविन्द कुमार इस अवसर पर मोहन राकेश के जीवन पर एक विशेष आलेख बनास जन के पाठकों के लिए तैयार कर रहे हैं।

लोकसभा के चुनावों की घोषणा हो चुकी है। लोकतंत्र का यह जरूरी अनुष्ठान हमारे विश्वासों को मजबूत करने वाला सिद्ध हो।

पल्लव